अध्याय

2

शोध अभिकल्प और उसकी अन्तर्वस्तु

शोध अभिकल्प और उसकी अन्तर्वस्तुः—

यह शोध प्रबन्ध "मुस्लिम समुदाय मे जातीय गतिशीलता" का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन है। मूलतः जाति व्यवस्था हिन्दू सामाजिक व्यवस्था का अभिन्न घटक है। इसका प्रभाव मुस्लिम समुदायो के सामाजिक सम्बन्धो मे भी देखा जाता है।[1] मुसलमानो मे भी समाज का विभाजन वैसा ही है जैसा हिन्दू समाज मे। ये जातिगत परम्परागत व्यवसाय और अन्तर्विवाही वंशानुक्रम मे विभक्त है। जो परस्पर स्थानीय सोपान क्रम मे हिन्दू जातियो जैसे ही है। विभिन्न समाजशास्त्रीय अध्ययनो से स्पष्ट है कि प्रत्येक समुदाय एक वंशगत व्यवसाय से जुड़ा है। अपने स्थानीय क्षेत्र मे प्रत्येक मुस्लिम जातिगत परम्परागत व्यवसाय हिन्दू समूहो के साथ जजमानी सम्बन्ध रखते है। एक गांव के मुस्लिम अपनी समूह की आन्तरिक एकता उसी तरह बनाये रखते है जिस प्रकार एक हिन्दू जाति। कही पर एक मुस्लिम समूह का नाम वही है जो एक जातीय समूह की है। हिन्दू जातियो मे कठोर जाति व्यवस्था है वे अपनी जाति से पृथक अस्तीत्व की कल्पना नही करते है। अगर ऐसा होता है तो वे जाति से वहिष्कृत कर दिये जाते है। यही नही कठोर सामाजिक आर्थिक दण्ड से दण्डित भी किये जाते है। यद्यपि आधुनिक परिवेश मे इनमे परिवर्तन स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। मुस्लिम समुदाय हिन्दू जाति व्यवस्था से प्रभावित है। लेकिन इनमे हिन्दू जाति व्यवस्था जैसी कठोरता नही है।

---

(1) GUHA UMA- Caste among Rural Bangla Muslims man in India, RANCHI, APRIL-JUNE 1965 P 167

इससे स्पष्ट होता हे कि किन्ही सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भो मे ये हिन्दूओ से प्रभावित है तो इनमें इस्लाम धर्म के उदारवादी सामाजिक समानता के सिद्धान्तो और विचारो का भी समावेश है। मुस्लिम सामाजिक संरचना मे जाति एक महत्वपूर्ण इकाई है। जो हिन्दू धर्म से प्रभावित दिखती है। लेकिन अपने सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेशीय मूल्यों और आदर्शो से अपने को पृथक भी नही कर पाते है। बल्कि इन्होने सामंजस्य स्थापित कर लिया। इस सन्दर्भ मे सतीश मिश्रा का अध्ययन प्रासंगिक है। इसका उल्लेख करते हुए इन्होने लिखा है कि मुस्लिम विजेता अपनी प्रजातीय अस्तित्व को बनाये नही रख सके। वे अपनेआप को भारतीय वंश और परिवारिक परिवेश मे सामांजस्य स्थापित कर लिया।[2] यहॉ यह भी उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है कि मुस्लिम समुदाय विभिन्न जातीय समूहो मे विभक्त है। दूसरे शब्दो मे हिन्दूओ जैसे समाज का विभाजन मुस्लिम समुदायो मे भी है। इस सन्दर्भ मे ग्रास अन्सारी का अध्ययन प्रासंगिक है। उन्होने उ0प्र0 के मुस्लिम समुदायो के अध्ययन मे पाया की हिन्दू वर्ण व्यवस्था से थोडा भिन्न मुस्लिम समुदायों मे सामाजिक विभाजन पाया जाता है।[3] मुस्लिम समुदायो मे " अशरफ शब्दावली " सम्मानजनक समूहो के लिए प्रयुक्त होता है। जबकि दूसरो के लिए " अजलफ "। इन दोनो समूहो मे अन्तर केवल इतना है जितना हिन्दूओ मे द्विज तथा गैर द्विज मे होता है। अशरफ समुदाय के लोगो से अभिप्राय विशिष्ट जीवन पद्वति से है ये प्रायः भू स्वामी है जिनके पूर्वज विदेशी या

---

(2) MISHRA SATISH- MUSLIMS COMUNITIES IN GUJRAT, BOMBAY P. 158 0 9647

(3) ANSARI GRASS- MUSLIMS CASTE INUP ESTERN ANTHRO POLO- ZIST LUCKNOW.

गैर भारतीय मुस्लिम थे।[4] हिन्दू वर्ण व्यवस्था मे ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र की भांति मुस्लिम समुदाय भी चार वर्गो मे विभाजित है। सैयद, शेख, मुगल, पठान।[5] जफर शरीफ ने "हरलाकत कुवैनन आई इस्लाम" के अनुवाद के आधार पर मुस्लिम समुदायो मे उपरोक्त चार समूहो का उल्लेख किया है।[6] प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मे इनका संक्षेप मे उल्लेख करना आवश्यक हैं।

मुस्लिम समुदाय मे **सैयद** का सर्वोच्च स्थान है तथा समाज मे ये प्रतिष्ठित व्यक्ति के रुप मे माने जाते है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि सैयद समूह वाले इस्लाम के चौथे खलीफा की पुत्री के वंशज है। ये लगभग बीस शाखाओ मे विभक्त है। प्रत्येक शाखा अन्तर्विवाही होती है। लेकिन अन्य श्रेणी वहिर्विवाही होती है। मुस्लिम समुदाय मे **शेख** समूह का स्थान सैयद के बाद आता है। अर्थात मुस्लिम समुदाय मे इनका स्थान दूसरा है। ये सैयद वंश से निम्न श्रेणी के माने जाते है। मुस्लिम समुदाय मे इनका स्थान सैयद वंश से सामाजिक प्रतिष्ठा से निम्न स्तर का होता है। ऐसा माना जाता है कि शेख और सैयद के बीच उच्च शाखाओ को छोडकर अन्य भागो मे वैवाहिक सम्बन्ध होता है तीसरे तथा चौथे स्थान पर क्रमशः **मुगल तथा पठान** है। जो क्रमशः अपने को मंगोल और अफगानी के वंशज मानते है। जिनका अधिपंत्य भारत मे था।

---

(4) PROF. SHRIVASTAV PRN- BHARTIYA SAMAJ, SAMAJ SHASTRYA VIVE CHAN GYANDEEP PRAKASHAN PATNA 1991

(5) ANSARI GRASS- IBID

(6) SHARIF JAFAR- QUANAN I ISLAM LONDON P-9

उपरोक्त चारो के अलावा सबसे निम्न स्तर पर वे मुस्लिम है जिनका व्यवसाय निम्न श्रेणी का है। इन लोगो ने अपना नाम अपनी जाति व्यवसाय के आधार पर रखा है। उच्च जाति के लोग उनके साथ खाने–पीने मे भागीदार नही होते है। किसी–किसी क्षेत्र मे निम्न श्रेणी के मुस्लिम मस्जिदो मे सामुहिक रुप से सम्मिलित नही किये जाते है। हांलाकि इस्लाम धर्म मे सभी को समान समझा गया है। यह भी सत्य है कि मुस्लिम समुदाय मे सामाजिक विभिन्नता के बावजूद सभी मुस्लिम एक ही मस्जिद मे नमाज पढ़ते है एक साथ खाना खाते है तथा सामुहिक रुप से धार्मिक अनुष्ठानो मे भाग लेते है। अध्ययन मे यह पाया गया है कि धर्मिक दृष्टि से इस्लाम मे सभी को समान माना गया है। लेकिन सामाजिक एवं जातिगत आधार पर देखने से स्पष्ट होता है कि मुस्लिम जाति व्यवस्था भी हिन्दू जाति व्यवस्था से प्रभावित है।

मैने अपने अध्ययन मे पाया की मुस्लिम समाज मे जातिगत भेदभाव उत्पन्न हुए है। इनके सदस्यो मे अपने से निम्न जातियो के यहां भोजन तथा खानपान मे भेदभाव करते हुए देखने को मिले है। इस प्रकार हम कह सकते है कि हिन्दू जाति व्यवस्था ने मुस्लिम जाति व्यवस्था को प्रभावित ही नही किया अपितु कई सन्दर्भो मे उसे अपने मे समाहित भी किया है। जिलान खान ने लिखा है कि इस्लाम के सिद्धान्त के अनुसार सभी मनुष्य समान है इसलिए इनमे समानता की भावना स्वाभाविक है। लेकिन इनमें वंशानुगत भिन्नता पायी जाती है। जबकि कटटरपंथी जातीय भिन्नता को स्वीकार नही करते है। यही कारण है कि ये लोग खान पान तथा धार्मिक अनुष्ठानो मे भेदभाव नही मानते है।[7]

---

(7) KHAN ZILAN- Caste among Muslims peseantary in India and Pakistan, man in India, APPRIL-JUNE 1969 vol 48, 13414 IBID P. 32

इस प्रकार मुस्लिम जाति व्यवस्था मे हिन्दू जाति व्यवस्था की विशेषताएं किसी ना किसी रुप मे परिलक्षित होती है। यहॉ यह भी उल्लेखनीय है कि सभी हिन्दू जातियों के लिए एक ही प्रकार का अनुष्ठान नही होता है। इन दोनो के धार्मिक पुजारियो (मुल्ला पंडित) की महत्ता लगभग समान होती है। यह भी देखने को मिलता है कि इन दोनो पुजारियो से लाभ हिन्दू और मुस्लिम दोनो लेते है। इन दोनो समुदायो द्वारा एक दूसरे के पूजा स्थल, मजार पर पूजा या मन्नत मांगना एक आम बात है। यद्यपि यह मनोवृत्ति हिन्दू समुदायों मे अधिक परिलक्षित होती है। यहॉ पर उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है कि मुस्लिम समुदाय की सामाजिक विशेषताए हिन्दू समुदायो की तरह है। ऐसा माना जाता है कि जो मुसलमान हिन्दू से धर्मान्तरण किये है उनमे अन्तर्विवाह और वहिर्विवाह के नियमो का पालन होता है।[8] इनमे अजनबी के साथ खान पान का प्रतिबन्ध भी स्पष्ट रुप से दृष्टिगोचर होता है। इस सन्दर्भ मे मो0 यासीन का अध्ययन उल्लेखनीय है। उनके अनुसार सैद्धान्तिक रुप से मुस्लिम समुदाय जाति विहिन समाज है लेकिन राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, कारको ने इसे वर्गीय समाज मे परिवर्तीत कर दिया जो जातीय कठोरता से भिन्न है।[9] मुस्लिम समुदायो मे हिन्दू जाति व्यवस्था की तरह अस्पृश्यता की

---

(8) **KHAN ZILAN- Caste among Muslims peseantary in India and pakisthan, man in India APPRIL-JUNE 1969 vol 48, 134, 14**

(9) **YASEEN MOHAMMAD- SOCIAL HISTORY OF ISLAM LUCKNOW 1958 P 1979, 15**

भावना नही होती है। लेकिन निम्न वर्गीय भारतीय मुसलमान अपने को निम्न श्रेणी हीन भावना से मिटा नही सके। यहॉ तक की मुस्लिम सामाजिक संस्तरण मे भी इनको निम्न सामाजिक प्रस्थिति प्राप्त है। कट्टरपंथी मुसलमान उन्हे उनकी मूल सामाजिक व्यवस्था से पृथक नही कर पाये है। यही कारण है कि मुस्लिम समुदायो मे भी जातीय कारक अपने अस्तित्व को बनाये हुए है।

मूरे टिट्स ने लिखा है कि इस्लाम जातियो की विभिन्नता को रोकने मे सफल नही हो सके है जो हिन्दू सामाजिक परिवेश का प्रभाव है।[10]

इसका तात्पर्य यह नही है कि मुस्लिम परम्परागत भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक व्यवस्था मे अर्न्तनिहीत मूल्य व्यवस्था के साथ अपने सांस्कृतिक मूल्यो को आत्मसात कर दिये है। बल्कि इनमे किन्ही न किन्ही रुपो मे दोनो की सामाजिक--सांस्कृतिक मान्यताए दृष्टिगोचर होती है। इसे एक सांस्कृतिक मिश्रण कहां जा सकता है। यदि यह कहा जाय की यह दोनो सामाजिक–सांस्कृतिक व्यवस्था के सम्पर्क का परिणाम है तो कोई अतिश्योक्ति नही होगी।

इस सन्दर्भ मे 1931 के भारतीय जनगणना मे ऐसे तीन परिवर्तनो की चर्चा की गयी है। गुजरात प्रदेश का उदाहरण देते हुए यह कहा जा सकता है कि इस शताब्दी के प्रारम्भ मे सुन्नी बोहरा कृषक थे अब व्यापारिक बन गये है। किन्तु उनका समूह नाम पहले जैसा ही है। कुछ अध्ययनो के आधार पर यह कहा जा सकता है कि गुजरात के

---

(10) TITUS MURRAY- INDIAN ISLAM OXFORD 1930 P 168, 16 IBID

मुस्लिम समुदायो मे विखण्डन की प्रवृत्ति अधिक है। इस प्रवृत्ति के कारण एक समुदाय वाले उपशाखाओ मे विभक्त हो जाते है। लेकिन प्रत्येक समुदाय मे उन्हे सम्मिलित किया जाता है जो एक परिवार के सदस्य है। यह भी देखा जाता है कि एक परिवार वाले निश्चित धार्मिक नेता से अनुदेशित होते है तथा दूसरे विखंडित परिवार वाले मौलवी का सहारा लेते है। इस तरह कालक्रम मे विशिष्ठ समुदाय वाले कई एक उपशाखाओ मे विभक्त हो जाते है। सभी लोगो मे धार्मिक प्रवृत्तिया सामान्य हो, यह आवश्यक नही है। जिस प्रकार हिन्दू जातियो मे जाति समूह का एक संघ देखा जाता है उसी प्रकार मुस्लिम समुदाय मे क्षेत्रो के आधार पर संघो की सदस्यता ग्रहण की जाती है। जिस प्रकार हिन्दूओ मे व्यवसायिक गतिशीलता दिखाई देती है। जबकि हिन्दू परम्परागत सामाजिक व्यवस्था मे कठोर सामाजिक , सांस्कृतिक प्रतिबन्धो और निषेधो से संचालित है। वही मुस्लिम सामाजिक व्यवस्था मे अन्तर्निहित सामाजिक–सांस्कृतिक धार्मिक मान्यताएं और विश्वास इसके विपरित दिशा की ओर इंगित करते है। आधुनिक बदलते परिवेश मे मुस्लिमो के सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यो मे परिवर्तन हुआ है।

नवीन प्रजातन्त्रिक, मूल्यो, संचार के साधनो, शिक्षा और राजनैतिक जागरुकता ने व्यवसायिक गतिशीलता के साथ–साथ जातीय गतिशीलता को भी अभिप्रेरित किया है। यहॉ उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है कि हिन्दूओ मे जातीय गतिशीलता नही है। हालॉकि जातीय सामाजिक, सांस्कृतिक प्रतिबन्ध और निषेध कमजोर हुए है। जातीय अस्पृश्यता की परम्परागत सामाजिक मान्यताएं कमजोर हुई है। जबकि इनमे व्यवसायिक गतिशीलता की मात्रा अधिक है।मुस्लिम समुदायो मे व्यवसायिक और जातीय गतिशीलता दोनो मे तीव्र गति से परिवर्तन हुए है। इससे स्पष्ट है कि इनमे सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति मे उन्नयन करने के अवसर उपलब्ध होने पर जातीय गतिशीलता मे अभिरुचि होती है।

इसका तात्पर्य यह नही है कि इनमे केवल उच्च सामाजिक प्रस्थिति की दिशा मे सामाजिक परिवर्तन होता है। बल्कि ऐसा भी देखा गया है कि आर्थिक प्रस्थिति मे गिरावट होने पर इनमे निम्न जातीय गतिशीलता भी पायी जाती है। यही हमारे शोध प्रबन्ध की विषयवस्तु है।

पूर्ववर्ती अध्ययनो की समीक्षाः—

मुसलमानो मे जातीय गतिशीलता सम्बन्धित अध्ययन अपेक्षाकृत नया है। ऐसा देखा गया है कि मुस्लिम समुदाय मे व्यवसायिक गतिशीलता अधिक तीव्र हो रही है। जिसके फलस्वरुप इनकी सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति मे उन्नयन हुआ है । यह भी देखा गयाा है कि जिनको रोजगार के नये अवसर नही मिल पाये है उनकी सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति मे अवन्यन हुआ है। वास्तव मे शिक्षा, रोजगाार के नये अवसर की उपलब्धता, राजैतिक जागरुकता आदि ऐसे कारक है जिसने मुस्लिम समुदाय मे सामाजिक–सांस्कृतिक, आर्थिक सरंचना मे बहुआयामी परिवर्तन किये है। वास्तव मे यही जातीय गतिशीलता के लिए अत्यधिक उत्तररदायी कारक है। निम्न मुस्लिम समुदाय मुख्यतया अपने परम्परागत व्यवसाय को न करके उद्योग, फैक्ट्रीयो मे कार्य करने लगे है। जिनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ हुई है। जिसके फलस्वरुप वह अपनी जातिगत व्यवसाय बदलने से उच्च जातीय समूहो के सामाजिक मानदण्डो और व्यवहार,प्रतिमानो को अपना लेते है। यहा तक की वे अपने को उच्च मुस्लिम जातियो की तरह सामाजिक प्रस्थिति प्राप्त कर लेते है। दूसरे शब्दो मे वे उच्च मुस्लिम जाति के सदस्य हो जाते है। वे अपने नामो को उपनाम मुस्लिम जाति सूचक शब्द से जोड़ लेते है। इसे मर्टन के विचारो मे सन्दर्भ समूह का उल्लेख करना आवश्यक है। कुछ प्रमुख समाजशास्त्रीयो ने 1960– 65 के

व्यवहार कहा जा सकता है।[11] इस सन्दर्भ मे कुछ समाजशास्त्रीय अध्ययनो दौरान मुस्लिम समुदाय मे गतिशीलता सम्बन्धी अध्ययन किये है। इन अध्ययनो से यह निष्कर्ष निकाला है कि हिन्दू जातियो की उपेक्षा मुस्लिम समूदायों मे अल्पकालीन रेखीय गतिशीलता होती है। निम्न मुरिलम जाति के व्यक्ति को उच्च जाति का सदस्य बन जाने से है। यह गतिशीलता शहरो मे अधिक देखने को मिलती है। एक समुदाय विशेष के सन्दर्भ मे यह पाया गया कि निम्न समूह के परिवार दो तीन वर्षो के आर्थिक सम्पन्नता के कारण उच्च सामाजिक परिस्थिति प्राप्त कर लिया है ऐसे मुस्लिम परिवार का अन्य लोगो के साथ मिलना जुलना तथा मस्जिद के सामूहिक कार्यो मे भाग लेना आसान हो जाता है। इस प्रकार जुलाहा, नाई, कसाई व्यवसायिक परिवार वाले आवश्यक अवसरो पर मौलवी की सेवा लेते है। मौलवी उनके यहाँ परिवारिक उत्सवों मे उचित निर्देश देवे है। ऐसे परिवारो के औरते जो पहले पर्दे मे नही रहती थी अब वह बुर्का पहनकर बाहर निकलती है। जो सम्भ्रान्त मुस्लिम परिवार का परिचायक है। जरीन अहमद ने लखनऊ के समीप एक गॉव के अध्ययन के आधार पर बताया की कटिपय मुस्लिम परिवार वाले अपने को शेख बताते है। जो वास्तव मे पहले जुलाहा निम्न व्यवसाय का कार्य करते थे। उसी क्षेत्र के "अशरफ" समुदाय वाले आरम्भ मे नवान्गतुक परिवार से दुर रहते थे। परन्तु बाद मे परिवारो मे आने जाने लगे।[12] इससे स्पष्ट होता है कि

---

(11) मर्टन, आर, के,– सोशल थियोरी एण्ड सोशल स्ट्रक्चर

(12) AHMAD ZARIN- MUSLIMS CASTE IN U.P. BOMBAY 1964

ज़ातीय गतिशीलता के लिए व्यवसायिक गतिशीलता, शिक्षा, रोजगार के अवसर, लोकतान्त्रीक मूल्यो से निर्मित परिवेश आदि ऐसे कारक है जो गतिशीलता मे सहायक है। इससे वे अपनी सामाजिक प्रस्थिति को बनाये रखने के लिए इतना तत्पर होते है कि अपना व्यवसाय समूह तथा जाति का नाम भी बदल देते है। सतीश मिश्रा (1964) ने अपने क्षेत्रीय अध्ययनो मे कुछ मुस्लिम सदस्यो को यह कहते हुए पाया की पहले हम कसाई थे, अब मै शेख हूँ, अगले वर्ष फसल कटने के बाद सैयद हो जायेगे।[13]

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मुस्लिम समुदाय मे व्यवसायिक गतिशीलता के साथ– साथ जातीय गतिशीलता भी पायी जाती है। अर्थात मुस्लिम समुदायो मे जातीय तथा व्यवसायिक गतिशीलता दोनो को सामान्य रुपो मे देखा जा सकता है। इस प्रकार समाजशास्त्रीयों ने अपने– अपने अध्ययन मे यह पाया की मुस्लिम समुदाय मे जातीय गतिशीलता रेखीय रूपो में होती है। जिसमे व्यक्ति अवनति से उन्नति की ओर उन्मुख होता है। जबकि मैने अपने अध्ययन क्षेत्र मे पाया कि मुस्लिम समुदाय मे जातीय गतिशीलता रेखीय रुपो मे न होकर चक्रीय रुपो मे होती है। यह गतिशीलता नीचे से उपर तथा उपर से नीचे की ओर चक्रीय परिवर्तन मे होती है। मैने यह देखा की वह व्यक्ति अन्सारी है लेकिन निर्धनता के कारण अपना जाति व्यवसाय बदल कर साई (फकीर) भिक्षा मांगने वाला बन गया है। जिसकी सामाजिक प्रस्थिति मुस्लिम समूहो मे निम्न समझा जाता है। इसके परिवारो की संख्या ज्यादा अधिक है तथा वह अशिक्षित है। जो अपने स्तर का कार्य करके परिवार का भरण पोषण नही कर सकता था ऐसी प्रस्थिति मे वह साई (फकीर) का व्यवसाय अपना लिया। लेकिन यह नही कहा जा सकता है कि यह गतिशीलता रेखीय रुपो

---

(13) MISHRA SATISH- MUSLIMS MUNITIES IN U.P. BOMBAY

मे होती है। बल्कि जिन लोगो को उच्च शिक्षा और आर्थिक विकास के अवसर प्राप्त हो जाता है वे निम्न जाति से उच्च जाति मे प्रवेश कर जाते है। जो इससे वंचित है वे उच्च सामाजिक प्रस्थिति से निम्न सामाजिक प्रस्थिति मे चले जाते है। लेकिन गतिशीलता की यह प्रक्रिया अचानक नही होती है। बल्कि इनमे मन्द गति से चक्रीय रुप मे अवनति या उन्नति होती है। क्योकि कोई भी व्यक्ति सीधे उच्च या निम्न सामाजिक प्रस्थिति प्राप्त नही कर लेता है। बल्कि उसे एक चक्रीय प्रक्रिया से प्राप्त होती है। इस प्रकार मुस्लिम समुदायो मे जातीय गतिशीलता को रेखीय न कहकर चक्रीय कहा जा सकता है। जिसे निम्न चित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की विषय वस्तु यही है।

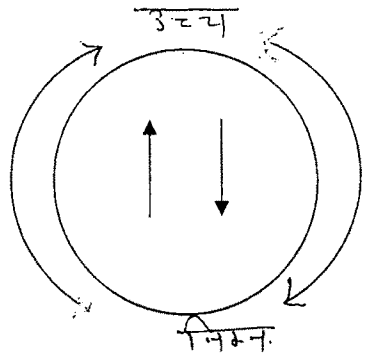

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मुस्लिम समुदाय मे जातीय गतिशीलता का समाज शास्त्रीय अध्ययन करना है।

अध्ययन का उद्देश्यः—

(1) उत्तरदाताओं की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक प्रस्थिति के सन्दर्भ मे जातीय गतिशीलता का अध्ययन करना।

(2) उत्तरदाताओं की राजनैतिक जागरुकता की पृष्ठभूमि मे जातीय गतिशीलता का अध्ययन करना।

(3) उत्तरदाताओं की व्यवसायिक गतिशीलता के सन्दर्भ में जातीय गतिशीलता का अध्ययन करना।

(4) उत्तरदाताओं की वंशानुगत जाति और व्यवसायिक गतिशीलता के सन्दर्भ मे जातीय गतिशीलता का अध्ययन करना।

(5) उत्तरदाताओं की जातीय गतिशीलता की अभिवृत्यात्मक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।

वास्तव मे इस शोध प्रबन्ध मे मेरा उद्देश्य मुस्लिम समुदाय मे जातीय गतिशीलता का अध्ययन करना ही है।

उपकल्पनाः—

मुस्लिम समुदाय मे शिक्षा, रोजगार के नवीन अवसर की उपलब्धता अर्थात व्यवसायिक गतिशीलता आदि कारकों के अतिरिक्त मुस्लिम समुदाय मे अन्तर्निहित सामाजिक समानता की भावना और वर्तमान राजनैतिक चेतना ने जातीय गतिशीलता को प्रोत्साहित किया है। इसके ठीक विपरित इससे वंचित और उदासिन व्यक्तियो मे निम्न सामाजिक जातीय प्रस्थिति को अपनाने के लिए वाध्य किया है।

अध्ययन क्षेत्रः—

अध्ययन क्षेत्र रसड़ा जो उ0 प्र0 के पूर्वांचल का अन्तिम पूर्वी जिला बलिया में स्थित है। यह क्षेत्र जिला मुख्यालय से 37 किमी पश्चिम मे स्थित है। यह 20' से 33' और 26' से 11' उत्तरी अक्षांश तथा 83' से 88' और 88' से 39' पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। जनपद बलिया मे साक्षरता का प्रतिशत 65.76 है। जबकि महिलाओ मे इसका प्रतिशत 34.13 है। जो पुरुषो की अपेक्षा आधा है। यहाँ पर कृषि योग्य भूमि 233954 हेक्टेयर भूमि है। जिसमें 167540 हेक्टेयर भूमि पर खरीफ और 177910 हेक्टेयर मे रबी तथा 8476 हेक्टेयर भूमि पर अन्य फसल

उगाई जाती है। इस जिले मे छः तहसील और 18 विकासखण्ड है। जिसमे रसडा तहसील जनपद का अग्रणी तहसील है। यहां पर सरकारी तथा गैर सरकारी औद्योगिक केन्द्र जैसे सरकारी चीनी मिल तथा कताई मिल है। तथा कई गैर लघु उद्योगो जैसे विस्किट के कारखाने, ब्रेड के कारखाने, नमकीन के कारखाने आदि शामिल है।

शैक्षणिक दृष्टि से यह विकास खण्ड अपना जनपद मे विशेष छाप छोड़ा है। यहॉ पर कई सरकारी तथा गैर सरकारी इण्टर कालेज तथा डिग्री कालेज स्थापित है। यहां तक की इस क्षेत्र मे शैक्षिक प्रशिक्षण केन्द्र तथा औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र भी स्थापित है। साथ ही यह क्षेत्र धार्मिक दृष्टिकोण से भी अपना विशेष स्थान लिया हुआ है। यहां पर रहने वाले सभी हिन्दू व मुस्लिमो मे धार्मिक तथा साम्प्रदायिक सौहार्द बना रहता है। यहां पर रहने वाले सभी जाति के लोग एक दूसरे के त्यौहारो व उत्सवों मे भाग लेते है। इस सन्दर्भ मे श्री नाथ बाबा, श्री रोशन शाह बाबा की पूजा और उत्सव का आयोजन साथ– साथ होना अत्यधिक उल्लेखनीय है।

यहॉ मै यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि अपने क्षेत्र मे मुस्लिमो मे जातीय गतिशीलता को देखा था। मेरी प्रबल इच्छा थी कि अध्ययन क्षेत्र के उन कारको का पता लगाया जाय जो मुस्लिम समुदाय मे जातीय गतिशीलता को प्रोत्साहित करते है। इसलिए मैने उपरोक्त अध्ययन क्षेत्र का चुनाव किया।

शोध पद्धतिः–

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध अन्वेषणात्मक शोध प्रारुप पर आधारित है। इसकी प्रकृति वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक है। अध्ययन सम्बन्धी तथ्यो के चयन के लिए मैने किसी निदर्शन पद्वति को नही अपनाया है। मैने रसड़ा के मुस्लिम परिवारो के मुखिया को उत्तरदाता मान लिया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन मे तथ्य संकलन हेतु पूर्व परिक्षित साक्षात्कार अनुसूचि का प्रयोग किया गया है। इसमे अर्द्ध सहगामी,

अवलोकन पद्वति का भी प्रयोग किया गया है। ताकि तथ्यो का गहराई से अध्ययन किय जा सके। इसके अतिरिक्त बातचीत द्वारा भी तथ्यो का सकंलन किया गया है। तथा प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध अध्ययनो, सरकारी व गैर सरकारी दस्तावेजों व रिपोर्टो पत्र, पत्रिकाओ, समाचार पत्रों एवं अन्य माध्यमो से भी सूचनाए प्राप्त की गयी है। प्राप्त तथ्यो के विश्लेषण हेतु आवश्यक्तानुसार सांख्यिकी नियमो और सिद्धान्तो का माध्य और मानक विचलन का भी प्रयोग किया गया है। इसके पश्चात तथ्यो का वर्गीकरण सारणीयन करके शोध प्रबन्ध को मैने लिखा है।

अध्ययन मे प्रयुक्त परिवर्त्यः—

किसी भी सामाजिक व्यवस्था मे परिवर्तन की प्रक्रिया को समझने के लिये व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक प्रस्थिति द्वारा समझा जा सकता है। व्यक्ति की गतिशीलता सम्बन्धी गतिविधियो को स्पष्ट करने के लिए दो प्रकार के परिवर्त्य का प्रयोग किया गया है।

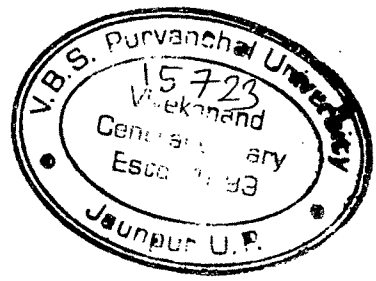

(1) स्वतन्त्र चरः—

इसके अन्तर्गत जाति परिवार आयु, शिक्षा, आय और भू— आकार (एकड़ में) को सम्मिलित किया गया है। जिनका वर्णन निम्नवत है।

(अ) जातिगत प्रस्थितिः—

मुस्लिम समुदाय मे जातीय गतिशीलता के लिये जातिगत प्रस्थिति अधिक उत्तरदायी है। जैसा की अध्ययन के दौरान यह पाया गया है कि जो व्यक्ति निम्न जाति का है वह अपने से उच्च जाति मे जाने के लिए इच्छुक है।

(ब) परिवार का आकारः—

परिवार समाजीकरण की महत्वपूर्ण इकाई है। जैसा की कूले ने कहा है कि "परिवार मानव स्वभाव की पोषिका है।" इस प्रकार परिवार का प्रत्येक समुदाय के लिए उतना ही महत्व है जितना मुस्लिम समुदाय मे है। क्योकि बालक सर्वप्रथम परिवार के ही सम्पर्क मे आता है। और परिवार के वातावरण मे रहकर विभिन्न प्रकार के गुणो को सीखकर एक सामाजिक प्राणी के रुप मे विकसीत होता है। इस प्रकार यह देखा गया है कि जिस परिवार का आकार छोटा तथा मध्यम है उनमे जातीय गतिशीलता विस्तृत परिवार वालो की अपेक्षा अधिक तीव्र है। इस प्रकार परिवार का आकार भी जातीय गतिशीलता के लिए काफी अत्तरदायी है।

(स) आयुगत प्रस्थितिः—

मुस्लिम समुदाय मे जातीय गतिशीलता के सन्दर्भ मे आयु का विशेष महत्व है। जैसा की अध्ययन करने पर पाया गया है कि युवा वर्ग मे जातीय गतिशीलता के प्रति अभिरुचि अधिक है। जबकि क्रमशः इसके बाद प्रौढ़ अति प्रौढ़ तथा वृद्ध वर्ग के उत्तर दाताओ मे इसकी गति धीमी होती जा रही है।

(द) शैक्षिक प्रस्थितिः—

मुस्लिम समुदाय मे जातीय गतिशीलता के लिए शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। अपने क्षेत्र का अध्ययन करने पर पाया की जो उत्तरदाता उच्च शिक्षा प्राप्त किये हुए है उनमे गतिशीलता की गति तीव्र है।

(य) आयगत प्रस्थितिः—

मुस्लिम समुदाय मे जातीय गतिशीलता का आय से सीधा सम्बन्ध है। जैसा की हमने अध्ययन मे पाया है कि जिस व्यक्ति का आय अधिक है और वह निम्न जाति का है तो वह अपने से उच्च

जाति मे जाने के लिए उत्साहित है। यहां तक की वह अपने नाम के बाद उच्च जाति समूह के टाईटिल को जोड़े हुए है। उदाहरण रुप मे यह कहा जा सकता है कि रसड़ा क्षेत्र मे एक व्यक्ति है वह जाति का डफाली है लेकिन वह अपने नाम के बाद अन्सारी लिखता है।

(र) भू– आकार (एकड़ मे):–

मुस्लिम समुदाय मे जातीय गतिशीलता को भू आकार ने काफी प्रभावित किया है। जिस उत्तरदाता के पास अधिक भूमि है और वह निम्न तथा मध्यम जाति का है तो वह अपने से उच्च जाति मे जाने के लिए उत्सुक है।

(2) आश्रित परिवर्त्य :–

(अ) अपनी जाति:–

आश्रित परिवर्त्य के अन्तरगत अपनी जाति मे रहने वाले उत्तरदाताओ का विशेष महत्व है। अपनी जाति मे रहने वाले वे उत्तरदाता है। जिनकी आर्थिक प्रस्थिति तथा शैक्षिणिक प्रस्थिति उच्च है और उनकी जातिगत प्रस्थिति भी उच्च है। जो जातीय गतिशीलता के प्रति अभिरुचि नही रखते है।

(ब) अपनी जाति से उपर:–

इसके अर्न्तगत् उन उत्तरदाताओ को सम्मिलित करते है जिनकी आर्थिक व सामाजिक प्रस्थिति निम्न है। फिर भी जातीय गतिशीलता के प्रति अभिरुचि रखते है। ऐसे उत्तरदाताओं मे निम्न तथा निम्नतम जाति के उत्तरदाता सर्वाधिक है। तथा आयु की दृष्टि से युवा वर्ग जातीय गतिशीलता के प्रति अभिरुचि रखने मे सर्वाधिक उत्सुक है।

(स) अपनी जाति से निम्न:–

इसके अर्न्तगत उन उत्तरदाताओं को सम्मिलित किया गया है जो आर्थिक प्रस्थिति खराब होने पर अपनी जाति को छोड़कर अपने से निम्न जाति मे प्रवेश करके अपनी जीविका चलाते है। ऐसे उत्तरदाताओ मे उच्च मध्यम तथा मध्यम वर्ग के अति प्रौढ़ तथा वृद्ध वर्ग के उत्तरदाता है।

अध्ययन का सन्दर्भः—

जाति व्यवस्था एवं इससे जनित सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यो का महत्वपूर्ण स्थान है। आधुनिक परिवेश मे जनतांत्रिक मूल्यो ने इस पर प्रबल प्रहार किया है। व्यक्ति की मानसिकता और उसकी वैचारकीय परम्परागत सामाजिक संरचना के लिए एक चुनौती उत्पन्न कर रही है। इससे व्यक्ति की भूमिका और उसकी प्रस्थिति मे बदलाव आया है। जो एक नवीन सामाजिक परिवर्तन की दिशा को बोध कराता है। मुस्लिम समुदाय मे जातीय गतिशीलता का अध्ययन इस सन्दर्भ मे अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाता है। मुस्लिम समुदाय मे वर्तमान समय मे शैक्षणिक तथा राजनैतिक प्रस्थिति मे वृद्धि हुई है जो जातीय गतिशीलता को प्रेरित किया है। जिसके कारण मुस्लिम समुदाय में जातीय गतिशीलता एक स्वाभाविक प्रक्रिया के रुप मे परिलक्षित होती है।

वास्तव मे परम्परागत मुस्लिम समुदाय में जाति व्यवस्था मे होने वाला परिवर्तन समाज शास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण विषय वस्तु को इंगित करता है। बदलते परिवेश में नवीन प्रौद्योगीकीय मूल्यो ने परम्परागत मूल्यो के लिए चुनौती उत्पन्न कर दिया है। एक ऐसे सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को निर्मित किया है। जिसके सन्दर्भ मे यह अध्ययन अपरिहार्य एवं महत्वपूर्ण हो जाता है।

अध्ययन मे प्रयुक्त कुछ अवधारणाएं:—

अध्ययन की दृष्टि से मैने कुछ अवधारणाओ को अपनाया है

जो इस प्रकार है।

(1) जातिगत प्रस्थितिः—

जातिगत प्रस्थिति मे प्रयुक्त अवधारणाएं –

(अ) उच्च जाति

(ब) उच्च मध्यम जाति

(स) मध्यम जाति

(द) निम्न जाति

(य) निम्नतम जाति

(2) शैक्षणिक प्रस्थितिः—

शैक्षणिक प्रस्थिति मे प्रयुक्त अवधारणाए इस प्रकार है।

(अ) शिक्षित एवॅ प्राइमरी

(ब) जूनियर तथा हाईस्कूल

(स) इण्टरमीडिएट

(द) स्नातक तथा इसके उपर

(3) आयुगत प्रस्थितिः—

आयुगत प्ररिथति मे प्रयुक्त आवधारणाए इस प्रकार है।

(अ) युवा

(ब) प्रौढ

(स) अति प्रौढ

(द) वृद्ध

(4) आयगत प्रस्थितिः—

आयगत प्रस्थिति मे प्रयुक्त आवधारणाए प्रकार है।

(अ) निम्न आय— 0— 20000.00

(ब) मध्यम आय— 21— 60000.00

(स) उच्चतम आय— 61000.00 से उपर

(5) परिवार आकारः—

परिवार आकार के आधार पर प्रयुक्त अवधारणाए निम्न है।

(अ) 0—5 सदस्य

(ब) 6—11 सदस्य

(स) 12 से उपर सदस्य

(6) व्यवसायिक प्रस्थितिः—

व्यवसायिक प्रस्थिति मे प्रयुक्त आवधारणाए निम्नवत है।

(अ) परम्परागत व्यवसाय

(ब) कृषि

(स) नौकरी

(द) व्यापार

(य) अन्य

(7) भू—आकार (एकड़ मे):—

भू—आकार मे प्रयुक्त आवधारणाए इस प्रकार है।

(अ) 0—1 एकड़

(ब) 1—2.50 एकड़

(स) 2.50— 3.50 एकड़

(द) 3.50— 5.00 एकड़

(य) 5.00 से अधिक

(8) राजनैतिक जागरुकताः—

राजनैतिक जागरुकता मे प्रयुक्त आवधारणाए निम्न है।

(अ) अति जागरुक

(ब) मध्यम जागरुक

(स) सामान्य जागरुक

शोध प्रबन्ध का प्रस्तुतीकरणः—

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मे उपलब्ध रामंको का वर्गीकरण करने के पश्चात उसका सारणीयन व मापनीय।

वर्गीकरणः—

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मे साक्षात्कार तथा अवलोकन द्वारा तथ्य एकत्रीत किये है। जो असम्बद्व तथा बिखरी हुई स्थिति मे होती है। जिसके आधार पर निष्कर्ष निकाला असम्भव होता है। इस प्रकार सही निष्कर्ष निकालने के लिए शोध अभिकल्प मे वर्गीकरण एवं सारणीयन का सहारा लिया गया है।

वर्गीकरण के अर्न्तगत बिखरी हुई तथा असम्बद्ध सूचनाओ को उनके गुणों के आधार पर या समानता के आधार पर एक वर्ग मे रखा जाता है। और प्राप्त तथ्यो के आधार पर उनका अध्ययन करने के पश्चात निष्कर्ष निकाला जाता है। इस विधि को अपनाने से सामाजिक व्यवस्था का अध्ययन सुस्पष्ट हो जाता है।

इस प्रकार मुस्लिम समुदाय मे जातीय गतिशीलता के अध्ययन मे वर्गीकरण एवं सारणीयन का उपयोग किया गया है। जिससे यह शोध प्रबन्ध काफी सही एवं सुस्पष्ट हो जाता है।

सारणीयनः—

प्राप्त सूचनाओ का उनकी गुणो के आधार पर वर्गीकरण करने के पश्चात उनका सारणीयन करना सरल होता है। जिससे शोधकर्ता को अध्ययन करने मे अधिक समस्या उत्पन्न होती है। इसका उद्देश्य सूचनाओ को व्यवस्थित रुप प्रदान करना है। वस्तुतः वर्गीकरण सारणीयन

का आधार है। इसके द्वारा प्राप्त तथ्य स्पष्ट और वोधगम्य होते है। सारणी वह माध्यम है जिससे तथ्यं बोलते है। सारणीयन मे प्राप्त तथ्यो को ग्राफ पेपर पर मास्टर सीट तैयार करते है। इसी पर सारणी मे तथ्यो को प्रतिशत के रुप मे प्रदर्शित करते है। इससे आकड़े स्पष्ट सुव्यवस्थित और सरल रुप मे विश्लेषण के लिए प्रस्तुत होते है। इस सारणी के आकड़ो के अध्ययन करने पर तथ्यो की अर्थपूर्ण व्याख्या होती है।

अध्ययन का महत्वः—

इस्लाम धर्म सामाजिक समानता की अवधारणा पर आधारित है। वास्तव मे इस धर्म का उद्‌भव अरब संस्कृति मे प्रचलित सामाजिक बुराईयो को समाप्त करने के अभिप्राय से हुआ था। इसमे सामाजिक अन्याय के विरुद्ध एक मौलिक परिवर्तन की अवधारणा अर्न्तनिहित थी। मुस्लिम समुदाय मे जाति व्यवस्था जैसी कोई ऊंच—नीच या अस्पृश्यता की भावना की कल्पना नही की जा सकती। ऐतिहासिक कालक्रम मे इसमे जाति जैसी व्यवस्था सम्मिलित हो गयी। जो इसकी एक सामाजिक इकाई के रुप मे परिलक्षित होती है। बदलते आधुनिक परिवेश ने मुस्लिम समुदाय को प्रौद्योगीकीय मूल्यो अर्थात वैज्ञानिक मूल्यो की ओर अभिप्रेरित किया है। इनकी मानसिकता, चिन्तन और व्यवहार प्रतिमान मे बहुआयामी परिवर्तन हुए है। इन परिवर्तनो ने सामाजिक व्यवस्था की मूलभूत इकाई जाति व्यवस्था मे परिवर्तन किया है। जाति व्यवस्था मे होने वाले परिवर्तन के लिए उत्तरदायी कारकों को जानना अति आवश्यक है। जो समाजशास्त्रीय गवेषणा की विषयवस्तु है। इस अभिप्राय से इसका समाजशास्त्रीय अध्ययन अति महत्वपूर्ण हो जाता है। जो एक नयी सामाजिक सरंचना की इकाई और सामाजिक व्यवस्था को समझने मे अपरिहार्य है।

प्रतिवेदन लेखनः—

यह शोध अध्ययन का लिखित संक्षिप्त विवरण है। इसमे अध्ययन विधि प्राप्त तथ्यो का विश्लेषण वर्गीकरण सारणीयन है। वास्तव मे यह सम्पूर्ण शोध की प्रक्रिया का एक संक्षिप्त विवरण है। ताकि यह अन्य अनुसंधान कर्ताओ के लिए भी उपलब्ध हो सके। इससे प्राप्त निष्कर्षो का पुर्नपरिक्षण भी हो सकता है। प्रायः शोधकर्ता शोध समस्या के नकारात्मक संदिग्ध अनिर्णायक पक्षों को छोड़ देता है। जो अध्ययन की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मैने अपने शोध अध्ययन मे इन तथ्यो की उपेक्षा नही की है। मैने इनके हर पक्ष को लिखने का प्रयास किया है। इससे प्राप्त निष्कर्ष अनुसंधान की भावी दिशा को इंगित करते है। जो एक महत्वपूर्ण पक्ष है। यह भावी अनुसंधान की विषय वस्तु होता है।

अध्याय योजनाः—

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की निम्न लिखित अध्याय योजना है।

(1) भूमिका

(2) शोध अभिकल्प और उसकी अन्तर्वस्तु

(3) उत्तरदाताओ की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि :—

(4) जातीय गतिशीलता के सामाजिक निर्धारक

(5) मुस्लिम समुदाय मे व्यवसायिक गतिशीलता

(6) मुस्लिम समुदाय मे राजनैतिक जागरुकता

(7) जातीय गतिशीलता की अभिवृत्यात्मक पृष्टभूमि

(8) उपसंहार